NEERAJ®

भारत का इतिहास
(ई. 1206–1707)

(History of India From C. 1206-1707)

B.H.I.C.-133

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Prieti Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारत का इतिहास ई.1206–1707

(History of India From *C.* 1206-1707)

Question Paper–June-2024 (Solved) 1
Question Paper–December-2023 (Solved) 1
Question Paper–June-2023 (Solved) 1
Question Paper–December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

राजनीतिक संरचनाएं
(Political Structures)

1. इतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ 1
(Trends of History Writing)

2. दिल्ली सल्तनत की स्थापना, प्रसार और सुदृढ़ीकरण 9
(Foundation, Expansion and Consolidation of Delhi Sultanate)

3. क्षेत्रीय राज्य 19
(Provincial Kingdoms)

4. विजयनगर साम्राज्य और दक्खन राज्य 32
(Vijayanagar Empire and Deccan States)

5. प्रारंभिक मुगल और अफगान 44
(Early Mughals and Afghans)

6. मुगल साम्राज्य : अकबर से औरंगजेब 53
(Mughal Empire : Akbar to Aurangzeb)

सैन्य एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ
(Military and Administrative Systems)

7. प्रशासनिक संरचना 69
(Administrative Structure)

8. सैन्य संगठन और मनसब व्यवस्था 79
(Army Organization and Mansab System)

9. इक्ता और जागीर 84
(Ikta and Jagir)

10. भू-राजस्व 89
(Land Revenue)

11. ग्रामीण समाज 100
(Rural Society)

12. आंतरिक व्यापार 109
(Inland Trade)

13. समुद्री व्यापार 117
(Oceanic Trade)

14. तकनीकी, शिल्प उत्पादन और सामाजिक परिवर्तन 123
(Technology, Craft Production and Social Change)

15. कस्बे, नगर तथा नगरीय केन्द्रों का विकास 130
(Towns, Cities and Growth of Urban Centres)

16. भक्ति और सूफ़ी परंपराएं 135
(Bhakti and Sufi Traditions)

17. वास्तुकला एवं चित्रकला 149
(Architecture and Painting)

18. महिलाएँ और लैंगिक स्थिति 161
(Women and Gender)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत का इतिहास ई. 1206-1707

B.H.I.C.-133

(History of India From *C.* 1206-1707)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से दो प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. दिल्ली सल्तनत के केन्द्रीय प्रशासन की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-69, 'दिल्ली सल्तनत के अधीन केन्द्रीय प्रशासन'

प्रश्न 2. मुगलों के काल के राजनैतिक इतिहासकारों (chronicles) पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'राजनैतिक वृत्तांत : मुगल', पृष्ठ-1, 'राजनैतिक वृत्तांत : दिल्ली सल्तनत'

प्रश्न 3. उत्तर-पश्चिम भारत में किस प्रकार से राजपूत अपने राजतंत्र स्थापित करने में सफल हुए?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-21, 'उत्तरी एवं पश्चिमी भारत'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नयनकार व्यवस्था

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-39, प्रश्न 7

(ख) भारत में द्वितीय अफगान साम्राज्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-47, 'भारत में दिल्ली अफगान साम्राज्य की स्थापना : 1540-1555 ई.'

(ग) मनसब व्यवस्था

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-79, 'मनसब व्यवस्था'

(घ) मुगल और मराठा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-63, प्रश्न 11

भाग-II

प्रश्न 5. मुगल भू-राजस्व प्रणाली पर लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-90, 'मुगलकालीन भू-राजस्व व्यवस्था'

प्रश्न 6. एकाधिकार व्यापार के विशेष संदर्भ में भारत में पुर्तगाली व्यापार के स्वरूप का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-121, प्रश्न 9

प्रश्न 7. मुगल वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-150, 'मुगलों के अधीन वास्तुकला'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दा पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-143, '(ख) महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन'

(ख) मुगल चित्रकला में यूरोपीय रूपक

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-149, 'परिचय', पृष्ठ-157, प्रश्न 26

(ग) चाँद बीबी

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-162, 'चाँद बीबी', पृष्ठ-167, प्रश्न 8

(घ) वस्त्र तकनीकी

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-123, 'वस्त्र तकनीकी'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारत का इतिहास ई. 1206–1707

B.H.I.C.-133

(History of India From *C.* 1206-1707)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से दो प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. बहमनी राज्य के उदय तथा पतन का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'बहमनी शक्ति का उदय'

प्रश्न 2. मुगल साम्राज्य के पतन से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-58, 'मुगल साम्राज्य का पतन'

प्रश्न 3. इक्ता की व्याख्या कीजिए। इक्तादार की क्या शक्तियाँ तथा कर्त्तव्य थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-84, 'इक्ता व्यवस्था'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) जियाउद्दीन बरनी

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'जियाउद्दीन बरनी'

(ख) मालवा राज्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-19, 'मालवा'

(ग) नायक राज्यों का उदय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'दक्षिण भारत में नायक राज्यों का उदय'

(घ) मुगल भारत में फसलें

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-101, 'मुगलकालीन फसलें'

भाग-II

प्रश्न 5. दिल्ली सुल्तानों की भू-राजस्व प्रणाली की संक्षिप्त में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-90, 'मुगलकालीन भू-राजस्व प्रणाली'

प्रश्न 6. मुगलकाल में स्थल व्यापार तथा वाणिज्य की प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-109, 'मुगलों के अधीन व्यापार तथा वाणिज्य'

प्रश्न 7. मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-163, प्रश्न 1, 'मध्यकालीन बंगाल में महिलाएं'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) मध्यकाल में गोला-बारूद तथा तोप और बन्दूकें

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-124, 'बारूद और अग्नि-शस्त्र'

(ख) दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-135, 'दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि'

(ग) नक्शबंदी सिलसिला

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-139, 'नक्शबंदी सिलसिला'

(घ) सूर वास्तुकला

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-159, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत का इतिहास ई. 1206-1707

(History of India From *C.* 1206-1707)

राजनीतिक संरचनाएं
(Political Structures)

इतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ
(Trends of History Writing)

1

परिचय

इतिहास का अध्ययन सदैव सामाजिक परिवर्तनों से संबंधित रहा हैं। मध्यकालीन इतिहासकारों ने वंशवादी इतिहास के साथ एक वंश से दूसरे वंश में होने वाले परिवर्तनों को भी अपने अध्ययन में सम्मिलित किया। इस इकाई में हम मध्यकालीन इतिहासकारों का दृष्टिकोण समझेंगे। इस संदर्भ में बरनी व अबुल फज़ल का महत्वपूर्ण योगदान है। ये भी जानना आवश्यक है कि बरनी व अबुल फज़ल के लेखन का उद्देश्य सिर्फ प्रसिद्धि पाना तो नहीं था। इसके अतिरिक्त उनके लेखन पर धार्मिक आस्थाओं के प्रभाव को समझना भी महत्वपूर्ण पहलू हैं। इस इकाई में अरबी, फारसी इतिहास लेखन और विदेशी वृत्तांतों पर भी चर्चा की गयी हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

अरबी और फारसी ऐतिहासिक परंपरायें

इस्लामिक विश्व की भाषा अरबी होने के कारण इस काल का उपलब्ध ऐतिहासिक लेखन अरबी भाषा में है। अरबी ऐतिहासिक परंपरा में राजनैतिक और सैन्य घटनाओं के अतिरिक्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को भी सम्मिलित किया गया है। अरबी इतिहास लेखन की महत्वपूर्ण विशेषता इसनाद थी, जिसका तात्पर्य 'वर्णनकर्त्ताओं की श्रृंखला' से है। इस संदर्भ में अल-बालादुरी द्वारा रचित 'फुतुह-उल-बुल्दान' महत्वपूर्ण है। अल-मसूदी एक महान यात्री थे, जिन्हें इतिहास को भूगोल के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने का श्रेय जाता है। 11वीं सदी से शासन से जुड़े अधिकारियों और विद्वानों ने अपने शासकों और घटनाओं का इतिहास लेखन शुरू किया। इस अरबी इतिहास लेखन का केन्द्र दरबार की राजनीति तथा अभिजात्य वर्ग पर थी। इससे अरबी इतिहास का झुकाव वंशवादी की तरफ बढ़ा। अल उत्बी ने अपनी रचना 'तारीख-ए-यमीनी' में गजना के सुल्तान महमूद का उल्लेख किया है। 'अल बिरूनी' में इतिहास लेखन की पुरानी शास्त्रीय परंपरा का अनुसरण किया। इब्न खलदून की कृति 'मुकद्दिमा' में मानव समाज व मानव संबंधों का विश्लेषण किया गया है। फारसी इतिहास लेखन वंशवादी इतिहास तक सीमित रहा, क्योंकि फारसी इतिहासकारों ने अपनी रचनाओं को शासकों के प्रति वफादारी सिद्ध करने के उद्देश्य से लिखा। मिन्हाज-ए-सिराज द्वारा रचित 'तबकात-ए-नासिरी' नासिरीरुद्दीन को, ज़ियाउद्दीन बरनी की 'तारीख-ए-फिरोज़शाही फिरोज़शाह तुगलक को समर्पित थी। अबुल फज़ल की लेखनी शैली में अरबी और फारसी का संशोधित रूप था। फारसी भाषा शीघ्र ही सुल्तानों, कुलीनों तथा साहित्यकारों की भाषा बन गयी।

राजनैतिक वृत्तांत : दिल्ली सल्तनत

सल्तनतकाल से संबंधित लेखन अधिकतर फारसी में व फारसी परंपरा के अनुरूप लिखा गया था। हसन निजामी की 'ताज-उल-मासिर' और फ़ख-ए-मुदाब्बिर की 'आदाब-उल हर्ब वा शुजात' इस काल की प्रारंभिक रचनाएं थी। हसन निजामी की रचना के अनुसार दिल्ली सल्तनत काल (1191-1192) से 1229 सी.ई. तक का माना जाता है। मिन्हाज-उस सिराज की 'तबकात-ए-नासिरी' जो सुल्तान नसीरूद्दीन को समर्पित है। अमीर खुसरो एक प्रसिद्ध कवि-इतिहासकार था, जो दिल्ली की भवन संरचनाओं, दरबारी जीवन और उत्सव-समारोह का रोचकपूर्ण उल्लेख करता है। देवल रानी खिज़्र खां (आशिका), नुह सिपहर, तुगलकनामा, फुतुह-उस सलातीन गज़नी आदि सल्तनत-काल की अन्तकृतियां हैं। शम्स सिराज अफीफ की रचना 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' फिरोज़शाह तुगलक के जीवन काल से संबंधित है, जो फिरोज़ के लखनौती, जाजनगर, नगरकोट और थट्टा के अभियानों का उल्लेख करती है। अफीफ ने पहली बार सल्तनत-काल के कुल राजस्व का ब्यौरा प्रस्तुत किया है। याहया बिन अहमद सरहिन्दी की 'तारीख-ए मुबारक शाही' में वंशवाद का वर्णन है, जिसमें मुइजुद्दीन गौर से लेकर सैयद शासक मुहम्मद शाह (1438) का उल्लेख है।

ज़ियाउद्दीन बरनी

ज़ियाउद्दीन बरनी की प्राथमिक रचनाएं–तारीख-ए-फिरोज़शाही, फतवा-ए-जहाँदारी और साहिफा-ए-नात-ए-मुहम्मदी है। बरनी ने अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियंत्रण उपायों, निर्माण गतिविधियों,

www.neerajbooks.com

दिल्ली के बाजारों व व्यापार का विशेष रूप से उल्लेख किया है। बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक के अंतर्गत 17 वर्षों तक नदीम (सलाहकार) के रूप में कार्य किया। उन्होंने तुगलक की प्रशंसा करते हुए बताया कि मुहम्मद बिन तुगलक ने आध्यात्मिक और लौकिक शक्तियों को अपने अंदर आत्मसात करने का प्रयास किया। वह तुगलक की प्रतिभा, शिक्षा व तर्कसंगतता की प्रशंसा करता है। वह मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं की असफलता का कारण लोगों द्वारा असहयोग की भावना को बताता है। उसने मुहम्मद बिन तुगलक को इस्लाम के बौद्धिक अनुयायी के रूप में दर्शाया है। उसका तुगलक द्वारा निर्मित नहरों के जाल से संबंधित विवरण अत्यंत सूक्ष्म व विस्तृत है।

राजनैतिक वृत्तांत : मुगल

मुगलकालीन इतिहास का विस्तृत संदर्भ ज़ैनखान की तुजुक-ए-बाबरी, ख्वांदमीर की कानून-ए-हुमायँनी, मुन्ना लाल की तारीख-ए-शाह आलम में भारी मात्रा में वृत्तांतों के रूप में प्राप्त होता है। तारीख-ए-अल्फी में 632 से लेकर अकबर के शासनकाल की इस्लामिक सहस्राब्दी का वर्णन है। ख्वाजा निजामुद्दीन की तबकात-ए-अकबरी में अकबर के शहरों और कस्बों का रोचक वर्णन हैं। बदायुनी ने 'मुन्तखब-उत-तबारीख' में सत्य विवरण प्रस्तुत करने के लिए गुप्त रूप से लिखा। मौतमद खान की 'इकबालनामा-ए-जहांगीरी' के पहले खंड में तैमूर और हुमायूं शासन-काल का उल्लेख है और दूसरे खंड में अकबर तथा तीसरा खंड जहांगीर के शासन के विभिन्न वृत्तांतों का वर्णन करता है। शाहजहां ने अबुल फज़ल की शैली में अपने शासनकाल का अधिकारिक इतिहास लिखवाने के लिए कजवीनी, अब्दुल हमीद तथा मुहम्मद सालिह कांबों को नियुक्त किया। आलमगीरनामा, माआसिर-ए-आलमागीरी, खुलासत-उस-सियाक, मुन्तखब-उल-लुबाब, नुस्खा-ए दिलकुशा जैसी रचनाएं औरंगजेब के शासनकाल की विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख देती है।

अबुल फज़ल–महान विद्वान शेख मुबारक फज़ल नागौरी के पुत्र अबुल फज़ल अकबर के दरबार के सचिव होने के साथ अकबर के करीबी मित्र थे। उन्होंने अकबरनामा तथा आइन-ए-अकबरी जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। 'आइन-ए-अकबरी' अकबर के साम्राज्य का सांख्यकीय वर्णन प्रस्तुत करता है। यह पांच पुस्तकों का संकलन है, जिसमें पहला भाग अकबर साम्राज्य के प्रतिष्ठानों, दूसरा सेना, तीसरा विभिन्न पदों, राजस्व दरों आदि का विवरण प्रस्तुत करता है। चौथी पुस्तक में हिन्दू दर्शन, धर्म, चिकित्सा विज्ञान आदि का उल्लेख है और पांचवी पुस्तक में अकबर के कथन समाहित है। अकबरनामा लड़ाईयों और प्रशासनिक, राजनैतिक घटनाओं का संकलन है। अबुल फज़ल ने फारसी इतिहास लेखन में अरबी परंपरा को भी सम्मिलित किया, किंतु अकबर को आदर्शरूप में प्रस्तुत करने के कारण उसने अकबर की कमजोरियों को उजागर नहीं किया।

संस्मरण

वह ऐतिहासिक वृत्तांत जो व्यक्तिगत याद्दाश्त पर आधारित होता है, संस्मरण कहलाता है। इस श्रेणी में फिरोज़शाह की फुतुहात-ए-फिरोज़शाही, बाबर की बाबरनामा, गुलबदन बेगम का हुमायूंनामा/अहवाल-ए-हुमायूँ बादशाह और जहांगीर की तुजुक प्रमुख है। फुतुहात-ए-फिरोज़शाही का मुख्य उद्देश्य सुल्तान फिरोज़ की उपलब्धियों व कल्याणकारी गतिविधियों का दर्शाना था। अशोक के स्तंभ लेखों से शायद प्रेरित होकर इसे फिरोजाबाद की जामा मस्जिद पर भी अंकित किया गया था। अत: के.ए. निज़ामी इसे धार्मिक अभिलेख मानते हैं। इसमें निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के निर्माण का विस्तृत वर्णन के साथ फिरोज के धार्मिक विचारों के बारे में अन्तर्दृष्टि मिलती है। बाबर के संस्मरण बाबरनामा जो मूल रूप में चग़ताई तुर्की में लिखी गयी थी, जिसे इस्लामी साहित्य की एकमात्र सच्ची आत्मकथा कहा जाता है। बाबर की बेटी गुलबदन बेगम दिलदार का वृत्तांत इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे भारत में मुगल संप्रभुता के आरंभिक निर्माण काल की गवाह थी। उन्होंने तत्कालीन शाही महल व हरम से संबंधित जीवन पर रोशनी डाली है। जहांगीर ने तुजुक-ए-जहांगीरी में अपने संस्मरण वार्षिक वृत्तांत के रूप में लिखे थे। इसमें जहांगीर के शासनकाल का वर्णन है।

इंशा (पत्र-लेखन) परंपरा

इंशा का तात्पर्य सृजन है, किंतु मध्यकाल में इसका प्रयोग पत्राचार के संदर्भ में हुआ है। सल्तनतकालीन इंशा संग्रह में एजाज-ए-खुसरवी और इंशा-ए-महरू प्रमुख है। इंशा लेखन अधिकतर दीवानी के संदर्भ में लिखा गया था। दो प्रकार के इंशा का उल्लेख आता है–एक पत्र लेखन शैली से संबंधित, जो जरूरी नहीं कि वास्तविक हो। दूसरे प्रकार में वास्तविक दस्तावेज। पत्राचार आदि आते हैं। महरू के व्यक्तिगत पत्राचार का संग्रह इंशा-ए-महरू कहलाता है। सल्तनतकाल की तुलना में मुगलकालीन इंशा संग्रह बहुत अधिक है। सबसे प्रमुख अबुल फज़ल की रुक्कात-ए-अबुल फज़ल तथा मुकतूबात-ए-अल्लामी हैं।

आधिकारिक दस्तावेज

मुगलकालीन आधिकारिक दस्तावेज बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इसमें फरमान, निशान, परवाना, हस्ब, उल हुक्म व दस्तूर-उल अमल आदि सम्मिलित हैं।

सूफी लेखन

सूफी लेखन से संबंधित तीन प्रकार के साहित्य का उल्लेख मिलता है–मलफूज़ात, मक़तूबात और सूफियों की जीवनी संबंधी वृत्तांत। मलफूज़ात नैतिक और धार्मिक पहलुओं से संबंधित है जबकि मक़तूबात के अंतर्गत सूफी शिक्षकों के अपने शिष्यों के लिए लिखे गए पत्राचार सम्मिलित हैं।

विदेशी यात्रियों के वृत्तांत

मध्यकालीन यात्रा वृत्तांतों में पहला उल्लेख अरब भूगोल वेत्ताओं द्वारा किया गया है जो उनके भ्रमण के अनुभवों पर आधारित है। कई संस्कृत ग्रंथों के अरबी में अनुवाद होने से भारत-अरब संबंधों में सुदृढ़ता आई। कई अरबी रचनाओं जैसे सुलेमान ताज़िर द्वारा रचित अखबार-उस सिन्ध वाल हिन्द व इब्न हौकल की सूरत मल-अर्ज में भारत के वृत्तांतों का उल्लेख मिलता है। अल बरूनी के अरबी लेखन में भारत के शहरों का आकर्षक विवरण मिलता है। उसकी पुस्तक उल हिन्द इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। अरब वृत्तांतों में मुहम्मद बिन तुगलक को उनकी असीम उदारता, शैक्षिक और बौद्धिक उपलब्धियों और प्रशासनिक प्रतिभा के लिए जाना जाता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इब्नबतूता द्वारा रचित रेहला तुगलक के शासन की न्यायिक, राजनैतिक, सैन्य-संस्थाओं, कृषि-उत्पादों, व्यापार आदि पर बहुमूल्य रोशनी डालता है। इसके अतिरिक्त कई यूरोपीय यात्रियों द्वारा मुगलकाल के वृत्तांत लिखे गये हैं। इनमें से प्रमुख फादर मॉनसरेट, पेलसर्ट, सर टॉमस रो, बर्नियर, मनुची आदि हैं। इन सबने मुगलकालीन इतिहास का विस्तृत वर्णन किया है।

क्षेत्रीय ऐतिहासिक परंपरा

क्षेत्रीय ऐतिहासिक परंपरा के अंतर्गत विभिन्न राजस्थानी बोलियों के 17वीं शताब्दी के रिकॉर्ड्स हैं, जिन्हें जयपुर रिकार्डस के नाम से जाना जाता है। विवाह बहियां, अड़सट्ठा (आय और व्यय के रिकार्ड), अन्य बहियां आदि राजस्थान के आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं पर रोशनी डालती है। 17वीं से 19वीं शताब्दी तक मोढ़ी लिपि में मराठी दस्तावेजों का संग्रह मिलता है जो पेशवा और ईस्ट इंडिया कंपनी से संबंधित दस्तावेज हैं। पुणे अभिलेखागार में लगभग 50 मिलियन दस्तावेजों का संग्रह है, जिसमें कुछ दस्तावेज शिवाजी के काल के भी हैं। रामाचंद अमात्य द्वारा रचित 'अदनापत्र बखर' में शिवाजी से शंभाजी काल तक के घटनाचक्र का विवरण है। राजा कृष्णदेव राय द्वारा रचित 'अमुक्तामल्यदा' तेलुगु भाषा की उत्कृष्ट कृति है जो राजतंत्रीय सिद्धांतों, राज दायित्व, प्रशासन, सेना आदि से संबंधित है। इसी प्रकार विश्वनाथ नायक का तेलुगु ग्रंथ 'रायवाचकमु' में भी कृष्णदेव राय के शासनकाल का उल्लेख है।

अहोमी बोली में लिखा गया बुरंजी साहित्य असम के इतिहास को समझने का प्रमुख स्रोत हैं। इसे बाद में असम भाषा में रूपांतरित किया गया। बुरंजी साहित्य जय ध्वज और चक्र ध्वज के शासनकाल के समय नारा, चूटिया, मोरान, मुगलों आदि के साथ अहोम संघर्षों पर प्रकाश डालता है। इसी प्रकार क्षेमेन्द्र की 'लोकप्रकाश' व कल्हण की 'राजतरंगिणी' कश्मीर के इतिहास पर दृष्टि डालती है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. इतिहास लेखन की अरबी परंपरा की विशेषताएं क्या थीं?

उत्तर–इस्लामिक विश्व की भाषा होने के कारण प्राथमिक ऐतिहासिक लेखन अरबी भाषा में उपलब्ध है। अरबी ऐतिहासिक परंपरा, राजनैतिक और सैन्य घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन को भी सम्मिलित करती हैं। अरबी इतिहास परंपरा को वास्तविक युग के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसनाद अर्थात 'वर्णनकर्ताओं की शृंखला' अरबी इतिहास लेखन की महत्वपूर्ण विशेषता थी। पवित्र कुरान को मौलिक रूप से लिखने के लिए परंपराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण आवश्यक था, जिससे 'सबसे पवित्र सत्य' तक पहुंचा जा सके। इस संदर्भ में अल-बालादुरी की रचना फुतुह-उल-बुल्दान उत्कृष्ट है, जिसमें प्रत्येक घटना का वर्णन विश्वसनीय स्रोत पर आधारित हैं। अल मसूद को इतिहास तथा भूगोल को मिलाने का श्रेय जाता है। अपनी भारत और श्रीलंका की यात्रा के दौरान उसने अपने अनुभवों के साथ विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक जानकारी को भी कलमबद्ध किया। इस प्रयोग से अरबी इतिहास लेखन में एक प्रमुख आयाम जुड़ गया। एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम 11वीं शताब्दी में अरबी इतिहास लेखन में और जुड़ा, जिससे इतिहास लेखन का स्वर और रूप काफी बदल गया। दरबार से जुड़े अधिकारियों और विद्वानों ने अपने शासक और उससे संबंधित घटनाओं को लिखना शुरू किया, जिससे इतिहास लेखन का उद्देश्य आम लोगों के बजाय दरबार की राजनीति और अभिजात्य वर्ग पर केन्द्रित हो गया। यह लेखन शैली अल-मुसाब्बि और अल-कुर्तुबी की रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। शाही संरक्षण प्राप्त होने के कारण अरबी इतिहास लेखन वंशवाद पर केन्द्रित हो गया, जिसमें अपने संरक्षकों की उपलब्धियों की प्रशंसा करने की प्रथा शुरू हो गयी। इसमें अलंकारिता का तत्व भी सम्मिलित हुआ, जो विशेषतया अल उत्बी की तारीख-ए-यमीनी में स्पष्ट रूप से दिखायी दिया। इसमें गजना के सुल्तान महमूद और सुबुक्तिगीन का वर्णन है, किंतु मशहूर लेखक अल बरूनी ने इतिहास लेखन की पुरानी शास्त्रीय परंपरा का ही अनुसरण किया। अन्य महत्वपूर्ण रचना इब्न खलदून द्वारा रचित मुकद्दिना है, जो मानव समाज और संबंधों की गतिशीलता को कार्य-कारण संबंध के साथ जोड़ती है।

प्रश्न 2. इतिहास लेखन की फारसी परंपरा की विशेषताएं क्या थीं?

उत्तर–10वीं शताब्दी तक इतिहास लेखन में अरबी ऐतिहासिक परंपरा का वर्चस्व रहा, फिर फारसी पुनर्जागरण ने धीरे-धीरे इतिहास लेखन की अरबी परंपरा पर आधिपत्य स्थापित किया और शीघ्र ही फारसी सुल्तानों, कुलीनों और साहित्यकारों की भाषा बन गई। फारसी इतिहास लेखन ने इतिहास के दायरे को संकुचित किया और सामाजिक, धार्मिक इतिहास पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए राजनैतिक इतिहास और शासकों तथा कुलीनों के जीवन पर बल दिया। इस प्रकार फारसी इतिहास वंशवादी इतिहास कहलाया और फारसी इतिहासकारों ने अपनी रचनाओं का मूल्य बढ़ाने के लिए शासकों को समर्पित करना आरंभ किया। मिन्हाज-ए-सिराजजुज्जानी द्वारा रचित तबकात-ए-नासिरी (नसीरूद्दीन महमूद), जियाउद्दीन बरनी की तारीख-ए-फिरोजशाही (फिरोजशाह तुगलक), आरिफ कन्धारी की तारीख-ए-अल्फी (अकबर), मौतमदखान की इकबालनामा-ए-जहांगीर (जहांगीर) इसी श्रेणी में आती हैं। बरनी ने अपनी लेखन शैली में पारंपरिक फारसी ऐतिहासिक पद्धति को सम्मिलित किया, किंतु परिवर्तन के साथ। उसने दरबार के चित्रण में संगीतकार-नर्तकियों, नुसरत बीबी का उल्लेख किया है। अबुल फज़ल ने अपने लेखन में अरबी और फारसी दोनों लेखन पद्धतियों का संशोधित रूप से उपयोग किया। बाद के इतिहासकारों ने अपनी रचनाओं में विद्वानों और साहित्यकारों और सूफियों पर भी लिखना प्रारंभ किया। भारत में फारसी ऐतिहासिक परंपरा का प्रभाव अरबी लेखन पर हावी था।

प्रश्न 3. इतिहास लेखन में बरनी के योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर–जियाउद्दीन बरनी सल्तनतकाल का एक सफल लेखक था, जिसकी प्रमुख रचनाएं तारीख-ए-फिरोज़शाही, फतवा-ए-जहांदारी और साहिफा-ए-नात-ए-मुहम्मदी हैं। बरनी के लेखों में अलाउद्दीन के मूल्य नियंत्रण उपाय तथा अलाउद्दीन कालीन निर्माण गतिविधियों

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

का विस्तृत तथा रोचकपूर्ण वर्णन मिलता है। बरनी ने अपने लेखों में एक तरफ अलाउद्दीन के अंतर्गत सल्तनत की प्रगति में प्रशंसा की है, वहीं उसने सजा के मामलों में शरिया के प्रति उपेक्षा दिखाने के कारण अलाउद्दीन की आलोचना की है। बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में 17 वर्षों तक नदीम (सलाहकार) के रूप में कार्य किया और उसने तुगलक की प्रशंसा करते हुए उसे 'सुल्तान-ए-सईद' (पवित्र शासक) के रूप में संबोधित किया। बरनी ने तुगलक के सैन्य नेतृत्व, शिक्षा व उदारता की प्रशंसा करने के अलावा उसकी साहित्यिक गतिविधियों तथा तर्कसंगतता का भी उल्लेख किया है। बरनी के अनुसार, मुहम्मद तुगलक पांच वक्त की नमाज अदा करने वाला धर्मनिष्ठ मुसलमान था। बरनी ने मुहम्मद तुगलक को इस्लाम के बौद्धिक अनुयायी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो नये कानूनों और विनिमय के माध्यम से समाज की प्रगति का इच्छुक था। बरनी ने तुगलक को उसके इस्लामिक कानून के प्रति ज्ञान के आधार पर नुमान-ए-सानी की पदवी दी है। इसके अतिरिक्त तुगलक द्वारा निर्मित नहरों का जाल संबंधी वर्णन हमें बरनी की विशिष्ट लेखन कौशल से अवगत कराता है। बरनी ने उच्च कार्यालयों में निम्न वर्ग में जन्मे लोगों की नियुक्ति का भी अप्रतिम व विस्तृत वर्णन किया है। अत: बरनी की इतिहास लेखन शैली उस समय के समाज व सल्तनत के स्वरूप को समझने के लिए मूल्यवान है।

प्रश्न 4. इतिहास के स्रोत के रूप में अकबरनामा के महत्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–अकबरनामा ग्रन्थ की रचना अरबी तथा फारसी के विद्वान अबुल फज़ल ने की थी। इस विशाल ग्रन्थ को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग में अकबर के जन्म, तैमूरियों की वंशावली तथा बाबर-हुमायूँ का विवरण हैं। द्वितीय भाग में अकबर के राज्यारोहण से 17वें वर्ष तक का विवरण है। यह ग्रन्थ 1596 ई. में पूरा हुआ। इस किताब के तीसरे भाग को आईन-ए-अकबरी के नाम से भी जाना जाता है। अबुल फज़ल अकबर का घनिष्ठ मित्र और परामर्शदाता भी था। उसने अकबर के प्रशासन, विजयों, नीतियों आदि का विस्तृत विवरण दिया है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उसे अकबर की आध्यात्मिक शक्ति तथा बौद्धिक ज्ञान में अपरिमित विश्वास था। अत: उसका वर्णन व्यक्ति पूजा के समान है। अकबर के शासनकाल के बारे में, उन्होंने अकबर के अभियानों, उनकी नीतियों, उनके कारणों और उनके प्रभावों के बारे में विस्तार से वर्णन किया। इसलिए, अकबर-नाम मुगलों के इतिहास को जानने का एक बहुत ही उपयोगी स्रोत सामग्री है। लेकिन यह कुछ दोषों से भी ग्रस्त है। अकबर को एक आदर्श सम्राट और आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत करने के कारण अबुल फज़ल ने अकबर की कमजोरियों का उल्लेख नहीं किया।

निजामी के अनुसार, अबुल फज़ल ने इतिहासकार के रूप में 'जन' को केवल आंशिक रूप से सम्मिलित किया, अर्थात उन्होंने 'जन' को केवल एक आवश्यकता के रूप में लिया क्योंकि उनके बिना अकबर की विविध गतिविधियों की जानकारी अधूरी रह जाती। अत: अकबर के महिमामंडन के कारण वे अपनी 'तर्क शक्ति' का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाए, जिससे वृत्तांत में पक्षपात झलकता है। उन्होंने अकबर की विफलताओं का उल्लेख नहीं किया। उदाहरण के लिए अकबर द्वारा साम्राज्य की पूरी भूमि को खालिसा में बदलने के असफल प्रयोग का अकबरनामा में उल्लेख नहीं मिलता। इस प्रकार जो भी तथ्य अकबर के आदर्श चित्रण के अनुरूप नहीं थे, उन्होंने उसे नहीं लिया। लेकिन फिर भी तिथियों और भौगोलिक जानकारी तथा मुगलकालीन स्थितियों का अनुमान लगाने के संदर्भ में अकबरनामा एक महत्वपूर्ण रचना है।

प्रश्न 5. मुगल काल के कुछ संस्मरणों को सूचीबद्ध करें। इस अवधि के सामाजिक इतिहास के निर्माण के लिए गुलबदन बेगम का हुमायूंनामा किन मायनों में महत्वपूर्ण है?

उत्तर–वे ऐतिहासिक वृत्तांत या जीवनी जो मुख्यत: व्यक्तिगत याददाशत के आधार पर लिखे जाते हैं, वे संस्मरण कहलाते हैं। मध्यकाल के दौरान चार प्रमुख वृत्तांत इस श्रेणी में सम्मिलित हैं–

1. फिरोज़शाह की फुतुहात-ए फिरोज़शाही,
2. बाबर के संस्मरण, बाबरनामा,
3. गुलबदन बेगम का हुमायूँनामा,
4. जहाँगीर की तुजुक,

दिलदार बानू बेगम से बाबर की बेटी, गुलबदन बेगम का वृत्तांत, हुमायूँनामा, ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि उनका अवलोकन और अनुभव राजप्रसाद में एक अंतरंग व्यक्ति की अभिव्यक्ति थी और उन्होंने भारत में मुगल सम्प्रभुता के आरंभिक निर्माण काल को करीब से देखा था। जब वह सिर्फ आठ साल की थीं, तब बाबर की मृत्यु हो गयी। उन्होंने हुमायूँ के जीवन के उथल-पुथल वाले दौर का सामना भी किया। अबुल फज़ल के अकबरनामा के लिए उस अवधि के इतिहास लेखन को सुसाध्य बनाने के लिए गुलबदन बेगम ने अपने संस्मरण लिखे, जो हुमायूँनामा में संकलित हुए। ये संस्मरण हुमायूँ काल के जन्म, विवाह और अन्य सम्बन्धित राजकीय समारोहों के बारे में अन्तर्दृष्टि से परिपूर्ण है, जिसमें शासक की औपचारिक दरबार से अलग एक इंसान के रूप में किये गए क्रियाकलाप सम्मिलित है। उनका वृत्तांत काफी हद तक उनकी याददाश्त पर आधारित है। किंतु फिर भी हुमायूँनामा, बाबर और हुमायूँ पर प्रकाश डालने के साथ-साथ मुगल हरम के जीवन से भी हमें अवगत कराता है। इसमें राजसी सत्ता के व्यक्तिगत व सामाजिक संबंधों, आन्तरिक टकराव व तनाव, आदाब (नियम/शिष्टाचार/राजसी आचरण) की भूमिका आदि पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। उनके संस्मरणों से तत्कालीन शाही महिलाओं की शादी और सामाजिक शिष्टाचार का ज्ञान होता है। इसमें यह भी उल्लेख है कि महिलाएं किस प्रकार राजनैतिक मध्यस्थों की भूमिका निभाती थी। यह वृत्तांत मुगलों के प्रारंभिक काल में हरम में पर्दा की स्थिति पर भी रोशनी डालता है, जिससे ज्ञात होता है कि इसका प्रचलन तुलनात्मक रूप से कम कठोर था। हुमायूँनामा के अनुसार, हरम की प्रमुख महिला मुख्य रानी नहीं, बल्कि राजमाता थी, जो अक्सर राजा के सलाहकार के रूप में कार्य करती थी। हुमायूँ का बार-बार दिलदार बानू बेगम के पास जाना इसकी पुष्टि करता है। वास्तव में गुलबदन बेगम का हुमायूँनामा आरम्भिक मुगलकाल के जीवंत अनुभवों और सामाजिक, राजनैतिक वास्तविकताओं का चित्रण है। गुलबदन का वृत्तांत न केवल मुगल घराने के घरेलू जीवन पर रोशनी डालता है बल्कि यह लिंग सम्बन्धों बनाम राजनैतिक शक्ति की सीमाओं के सन्दर्भ में भी महत्वपूर्ण है।

www.neerajbooks.com